

श्री हनुमान चालीसा

श्री गुरु चरन सरोज रज निज मनु मुकुरु सुधारि । बरनउँ रघुबर बिमल जसु जो दायकु फल चारि ॥
बुद्धिहीन तनु जानिके, सुमिरौ पवन-कुमार । बल बुधि विद्या देहु मोहिं, हरहु कलेस विकार ॥

जय हनुमान ज्ञान गुन सागर । जय कपीस तिहुँ लोक उजागर ॥
रामदूत अतुलित बलधामा । अंजनि-पुत्र पवनसुत नामा ॥
महावीर बिक्रम बजरंगी । कुमति निवार सुमति के संगी ॥
कंचन बरन बिराज सुबेसा । कानन कुंडल कुंचित केसा ॥
हाथ बज्र औ ध्वजा बिराजै । काँधे मूँज जनेऊ साजै ॥
संकर सुवन केसरीनंदन । तेज प्रताप महा जग बंदन ॥
विद्यावान गुनी अति चातुर । राम काज करिबे को आतुर ॥
प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया । राम लखन सीता मन बसिया ॥
सूक्ष्म रूप धरि सियहि दिखावा । बिकट रूप धरि लंक जरावा ॥
भीम रूप धरि असुर सँहारे । रामचन्द्र के काज सँवारे ॥
लाय सजीवन लखन जियाये । श्री रघुबीर हरषि उर लाये ॥

3

रघुपति कीन्ही बहुत बड़ाई । तुम मम प्रिय भरतहि सम भाई ॥
सहस बदन तुम्हरो जस गावैं । अस कहि श्रीपति कंठ लगावैं ॥
सनकादिक ब्रह्मादि मुनीसा । नारद सारद सहित अहीसा ॥
जम कुबेर दिगपाल जहाँ ते । कबि कोबिद कहि सके कहाँ ते ॥
तुम उपकार सुग्रीवहिं कीन्हा । राम मिलाय राज पद दीन्हा ॥
तुम्हरो मन्त्र बिभीषन माना । लंकेस्वर भए सब जग जाना ॥
जुग सहस्त्र जोजन पर भानू । लील्यो ताहि मधुर फल जानू ॥
प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं । जलधि लांघि गये अचरज नाहीं ॥
दुर्गम काज जगत के जेते । सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते ॥
राम दुआरे तुम रखवारे । होत न आज्ञा बिनु पैसारे ॥
सब सुख लहै तुम्हारी सरना । तुम रच्छक काहु को डरना ॥
आपन तेज सम्हारौ आपै । तीनों लोक हाँक तें काँपै ॥
भूत पिशाच निकट नहि आवै । महावीर जब नाम सुनावै ॥
नासै रोग हरै सब पीरा । जपत निरंतर हनुमत बीरा ॥
संकट ते हनुमान छुड़ावै । मन क्रम बचन ध्यान जो लावै ॥
सब पर राम तपस्वी राजा । तिनके काज सकल तुम साजा ॥

और मनोरथ जो कोई लावै । सोई अमित जीवन फल पावै ।
 चारों जुग परताप तुम्हारा । है परसिद्ध जगत उजियारा ॥
 साधु संत के तुम रखवारे । असुर निकंदन राम दुलारे ।
 अष्ट सिद्धि नौ निर्धि के दाता । अस बर दीन जानकी माता ।
 राम रसायन तुम्हरे पासा । सदा रहो रघुपति के दासा ॥
 तुम्हरे भजन राम को पावै । जनम जनम के दुख बिसरावै ।
 अंत काल रघुबर पुर जाई । जहाँ जन्म हरि-भक्त कहाई ॥
 और देवता चित्त न धरई । हनुमत सेई सर्व सुख करई ।
 संकट कटै मिटै सब पीरा । जो सुमिरै हनुमत बलवीरा ॥
 जै जै जै हनुमान गोसाई । कृपा करहु गुरुदेव की नाई ॥
 जो सत बार पाठ कर कोई । छूटही बंदि महा सुखा होई ॥
 जो यह पढ़ै हनुमान चालीसा ॥ होय सिद्धि साखी गौरीसा ॥
 तुलसीदास सदा हरि चेरा । कीजै नाथ हृदय महँ डेरा ॥

दोहा

पवनतनय संकट हरन, मंगल मूरति रूप

राम लषन सीता सहित हृदय बसहु सुरभूप